सह-अस्तित्व : एक वैचारिकी

स्नेह भेंट - डॉ० संगीता मौर्या
असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी
26.03.19

विकास सिंह
संपादक
असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
गाजीपुर

लोकनाथ पब्लिकेशन

प्रथम संस्करण : २०१९

ISBN 978-93-81123-92-8

© प्रकाशक

Email- prcbsbi@gmail.com

lnpvns@gmail.com

Web : www.philosophical researchcouncil.com

मुद्रक

फिलोसोफिकल रिसर्च कौंसिल

प्रकाशक

लोकनाथ पब्लिकेशन

लखनपुर भुल्लनपुर

वाराणसी २२११०८

पंचदश पुष्प

समवायो एव साधु

डॉ. विकास सिंह ♦

पूरी दुनिया का इतिहास, संघर्षों के दास्तान की अंतहीन श्रृंखला है। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक वर्चस्व अथवा एकाधिकार की भावना, एकोअहं द्वितीयो नास्ति की सोच, अहंमन्यता उन संघर्षों की पीठिका निर्मित करते रहे हैं। राजनीति के क्षेत्र में प्राचीन राजतंत्रात्मक राज्यों में 'विजिगीषु' राजा की संकल्पना है। यही हमेशा युद्ध के लिए तत्पर, युद्धरत राजा, सम्राट या चक्रवर्ती राजा बन सकता था। चक्रवर्ती की यह अवधारणा राजनीतिक संघर्षों की जननी बनी रही।

इस क्रम में भारतीय इतिहास में चन्द्रगुप्त मौर्य, कनिष्क, समुद्रगुप्त, हर्षवर्धन, राजेन्द्र चोल, अकबर, औरंगजेब आदि तथा शेष विश्व में ईरानी दारा प्रथम, यूनानी सिकन्दर, रोमन जूलियस सीजर, कान्स्टेनटाइन एवं ओरेलियस एंटोनियस, फ्रांसीसी नेपोलियन के नाम जेहन में सर्वप्रमुखता से उभरते हैं। जीवन-पर्यन्त युद्धरत इन राजाओं ने यूँ तो विशाल साम्राज्यों का निर्माण किया, किन्तु मानवता का सृजन, सिंचन, पुष्पन, पल्लवन अपने कार्य-व्यवहार से जिस राजा ने अप्रतिम रूप से किया; वह है, मौर्य वंश का महान सम्राट अशोक।

ईसा पूर्व की तीसरी शताब्दी में (२७३ ईसा पूर्व से २३६ ईसा पूर्व) पूर्व में बंगाल से लेकर पश्चिम में अफगानिस्तान, उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कर्नाटक तक के विस्तृत भूभाग पर अशोक ने शासन किया। अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष (२६१ ईसा पूर्व) कलिंग-युद्ध की हृदय-विदारक

♦ असिस्टेन्ट प्रोफेसर,प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व, राजकीय महिला स्नातकोत्तर,महाविद्यालय, गाजीपुर

विज्ञान की चर्चा की और न ईश्वर व आत्मा का उल्लेख किया। उसने लोगों से अपनी वासनाओं को नियंत्रित करने तथा अपने आंतरिक विचारों में जीवन और आचरण को पवित्र बनाने की अपेक्षा की। अशोक धर्मों के सारे कर्मकांडों, आडम्बरों को नकार कर सर्व सुलभ, सरलतम मार्ग जनता के समक्ष रखता है। कर्मकांड एवं आडम्बर ही धर्मों को आपस में विलग करते हैं, उनके बीच में टकराव का कारण बनते हैं। अशोक ने इसी मूल समस्या पर चोट कर धर्मों के सह-अस्तित्व को संपोषित करने वाले मूल्यों को 'समवायो एव साधु' के रूप में प्रतिष्ठित करने का कार्य किया।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि आधुनिक दुनिया में चल रहे नरसंहार के हथियारों की होड़, परमाणु-युद्ध का गम्भीर संकट, सीरिया, ईराक, यमन, अफगानिस्तान, पाकिस्तान जैसे देशों में धार्मिक कट्टरपंथ का उभार एवं उत्पात पूरी मानवता के अस्तित्व को खत्म करने पर तुली हुई है; ऐसी परिस्थिति में अशोक के उदात्त आदर्श 'जिओ और जीने दो' का सिद्धान्त दुनिया में शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व हेतु मार्गदर्शन करने में सर्वथा सक्षम हैं। धार्मिक सह-अस्तित्व के लिए धर्म के मूल तत्वों को बताकर जनता के चरित्र को उठाना एवं सब में समवाय स्थापित करना उसका प्रधान लक्ष्य और चिन्ता थी। इसलिए उसने चट्टानों, प्रस्तर स्तंभों पर लेखों को अंकित कराया जो लगभग २२५० वर्षों के बीत जाने पर भी उसके जीवन की पवित्रता और विचारों की उच्चता के अमर स्मारक हैं। प्रसिद्ध इतिहासकार एच. जी. वेल्स ने सही ही कहा है:- इतिहास के स्तम्भों को भरने वाले राजाओं, सम्राटों, धर्माधिकारियों, सन्त महात्माओं आदि के बीच अशोक का नाम प्रकाशमान है और आकाश मे प्राय; एकाकी तारा की तरह चमकता है। वोल्गा से जापान तक आज भी उसके नाम का सम्मान किया जाता है। चीन, तिब्बत और भारत भी यद्यपि उसने उसके सिद्धान्त त्याग दिए हैं, उसकी महानता की पंरपरा बनाये हुए हैं। जितने लोगों ने कॉन्सटेंटाइन या शार्लमेन का कभी नाम सुना है, उससे भी अधिक लोग आज आदरपूर्वक उसका स्मरण करते है।